3- बिरसा आंदोलन का स्वरूप तथा जनजाति प्रशासन पर उसका प्रभाव —

औपनिवेशिक शासन के शोषण के विरुद्ध बिहार (वर्तमान झारखंड) के जनजातीय संघर्षों की कड़ी में 1895 से 1900 के मध्य चलने वाला बिरसा का उलगुलान (विद्रोह) सर्वाधिक संगठित तथा सशक्त था।

ब्रिटिश विरोधी — जनजातीय शोषण का मूल औपनिवेशिक शासन में देखा। महारानी राज के बजाय अबुआ राज (हमारा राज) का नारा दिया।

सांस्कृतिक एवं धार्मिक पुनरुत्थान — सारे जनजातीय संघर्षों से अलग, औपनिवेशिक शासन की समाप्ति के साथ-साथ विशुद्ध प्राचीन जनजातीय संस्कृति स्थापित करना भी उद्देश्य था।
मुंडाओं के सामाजिक धार्मिक पुनरुत्थान हेतु एकेश्वरवाद से प्रेरित 'बिरसैत पंथ' की स्थापना की। कई 'बोंगाओं' (देवी-देवताओं) के स्थान पर 'सिंहबोंगा' (सर्वोच्च देवता) की उपासना का उपदेश दिया। मांसाहार, मदिरा, अंधविश्वास के परित्याग का सलाह दिया। स्वयं की स्वीकार्यता के लिए उसने 'धरती अबा' (ब्रह्मांड के पिता) की उपाधि धारण की।

उग्र एवं हिंसात्मक - 6000 समर्पित मुंडाओं का दल बनाकर दिकुओं (बाहरी, जमींदार, महाजन, ठेकेदार) का कत्ल करने का आह्वान किया।
24 दिसम्बर 1899 में मुंडा का शासन स्थापित कर विद्रोह का एलान किया।